Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal
Journal No. 40776

An International Multidisciplinary
Quarterly Research Journal

ISSN 2277 - 5730

AJANTA

Volume - VII, Issue - IV,
October - December - 2018
Marathi / Hindi Part - I

VOLUME - VII, ISSUE - IV - OCTOBER - DECEMBER - 2018
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 5.5 (www.sjifactor.com)

CONTENTS OF HINDI PART - I

अ.क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१	श्री गुरू नानक देव जी और भक्ति साहित्य **डॉ. सोनदीप मोंगा**	१-४
२	२० वी सदी के महिला कथा साहित्य में स्त्री विमर्श **प्रा. डॉ. मालती डी. शिंदे (चव्हाण)**	५-११
३	हिन्दी साहित्य मे नारी प्रेम और सौंदर्य **सौ. अल्का एन. वानखडे**	१२-१४
४	हिंदी साहित्य में मानवीय सौंदर्य तथा प्रेम **प्रा. डॉ. वडचकर एस. ए.**	१५-१८
५	कवि डॉ. हरिवंशराय बच्चन और उनका हालावाद **प्रा. डॉ. विजया जगन्नाथ पिंजारी- शिंदे**	१९--२५
६	मणि मधुकर के नाटको में सामाजिक संवेदना **सहा. प्राध्यापक डॉ. विजय वाघ**	२६-२९
७	हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता **प्रा. डॉ. कुलकर्णी वनिता बाबुराव**	३०-३४
८	हिंदी दलित आत्मकथा में व्यक्त पीडा एवं संवेदना **प्रा. डॉ. डमरे मोहन मुंजाभाऊ**	३५-४०

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth
Dist. Parbhani

VOLUME - VII, ISSUE - IV - OCTOBER - DECEMBER - 2018
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 -IMPACT FACTOR - 5.5 (www.sjifactor.com)

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

७. हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता

प्रा. डॉ. कुलकर्णी वनिता बाबुराव
हिन्दी विभागाध्यक्षा कै. रमेश वरपुडकर महाविद्यालय, सोनपेठ. ता. सोनपेठ, जि. परभणी.

पत्रकारिता जनसेवा का सशक्त माध्यम है । वस्तुतः पत्रकारिता, समाज, सभ्यता, संस्कृति, भाषा और जीवन दृष्टि की बोधक होती है । भारत में पत्रकारिता को एक मूल्य के रुप में देखा गया है । सभ्यता का दिशा–दिग्दर्शन, मनुष्य की स्वाभाविक वास्तविक स्थिति का यथार्थवादी रुप पत्रकारिता में झलकता है । पत्रकारिता परिवर्तन की सुत्रधार है, क्रांति की अग्रदुत है और राष्ट्रीय चेतना की संवाहिका है । डॉ. शंकर दयाल शर्मा के अनुरार " पत्रकारिता पेशा नहीं जनता की सेवा का माध्यग है ।"1

भारत में पत्रकारिता की प्राचीन परंपरा रही है । महर्षि नारद को भारत का प्रथम पत्रकार माना जाता है । यह परंपरा आज फल–फूल रही है । हिन्दी पत्रकारिता हमेशा मानव मूल्यों की संवाहक रही है । सत्य, न्याय की स्थापना, अनाचार, शोषण तथा दासता की मुक्ति–गाथा रही हिंदी पत्रकारिता । हिंन्दी पत्रकारिता के उद्भव एवं विकास की एक लंबी गाथा है । हिंदी के पहले साप्ताहिक 'उदंत मार्तंड' के कोलकता से 30 मई, 1826 से प्रकाशन से अब तक हिंदी पत्रकारिता ने एक लंबा रास्ता तय किया है । प्रारंभ में जो पत्र प्रकाशित होतेथे उनमें घटनाओं का विवरण मात्र होता था पत्रकारो का उद्देश्य लोंगों तक सूचनाएँ पहूँचाना था । पत्रों में साहित्य का प्रकाशन नगण्य था ।

पहिली साहित्यिक पत्रिकाः 'कविवचन सुधा'

भारतेंदु हरिश्चंद्र ने 15 अगस्त, 1867 को वाराणसी से 'कविवचनसुधा' नामक मासिक पत्र निकाला जिसमें राजनीतिक और सामाजिक लेखों के अतिरिक्त कविता, प्रहसन एवं व्यंग्यपूर्ण रचनाएँ सम्मिलित थी । वास्तव में इसी पत्र से हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता का श्रीगणेशा हुआ । कविवचनसुधा के प्रारंभिक अंको में देव का 'अष्टयाम', दीनदयाल गिरि का 'अनुराग बाग', चंद का 'रासो' कबीर की साखी, बिहारी के 'दोहे' गिरीधर दास का 'नहुष' नाटक (हिन्दी का प्रथम नाटक) आदि का प्रकाशन हुआ । उस समय के प्रसिध्द साहित्यकार गंगाधर सिह, काशीनाथ खत्री, लाला श्रीनिवास दास, सरयू प्रसाद, सुमेर सिंह तोताराम पंडित आदी थे । इस पत्र ने एक विशिष्ट व व्यापक पाठक वर्ग तैयार किया" । 2 उस समय 'कविवचनसुधा' में रचनाओं का प्रकाशन सम्मान की बात थी ।

यह पत्र प्रारंभ में मासिक पत्र था । भारतेंन्दू ने इसे पाक्षिक बना दिया । 1875 से साप्ताहिक प्रकाशित होने लगा किंतू आर्थिक स्थिति अच्छि नहीं होने की वजह से भारतेंदू इसे लंबे समय तक प्रकाशित नही कर पाए । उन्होंने अपनी तंगहाली की पीडा इन शब्दों में व्यक्त की– "कविवचनसुधा' के कोष में दृव्य नही है ।"3 1885 में 'कविवचनसुधा' का प्रकाशन बंद हो गया । कुल मिलाकर इस पत्र ने हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता की पृष्टभुमि तैयार की ।

Ramesh Warpudkar (ACS) College Sonpeth • Lale Dist. Parbhani

प्रारंभ की अन्यं सहित्यिक पत्रिकाएं

भारतेंन्दू ने हिन्दी साहित्य के प्रचार–प्रसार के लिए 15 अक्टूबर 1873 को 'हरिश्चंद्र' मैगजीन प्रारंभ किया । आठ अंको के प्रकाशन के बार इसका नाम 'हरिश्चंद्र चंद्रिका' हो गया । इसमें कविता, अलोचना, लेख, कहानियां, व्यंग आदि प्रकाशित होते थे । 1880 में भारतेंदु ने इस पत्रिका को उदयपूर के पं. मोहनलाल पंड्या द्वारा प्रकाशित 'मोहन चंद्रिका' के साथ मिला लिया. इन्ही दिनों मेरठ के पंडित गौरीदत्त ने 1874 में 'नागरी प्रकाशन' नामक पत्र का प्रकाशन कर दिया । साथही उन्होंने 1888 में 'देवनागरी गजट' 1892 में देवनवागरी प्रचारक, 1891 में देवनागर नामक पत्रों का भी संपादन किया । 01 सितंबर 1877 को प्रयाग सें पं. बालकृष्ण भट्ट ने 'हिन्दी प्रदीप' नामक मासिक पत्र का प्रकाशन प्रारंभ किया " इसका मुख्य उद्देश्य हिन्दी भाषा का प्रचार, उसकी समृध्दि, समाज सुधार आदि था । इस पत्र ने हिंन्दी पत्रकारिता को एक नई ऊँचाई दी । उसी समय मिर्जापुर से पंडित बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' और कानपुर से पंडित प्रताप नारायण मिश्र ने क्रमशः 1881 'आनंद कादंबिनी' और 1883 'ब्राह्मण' के माध्यम से हिन्दी पत्रकारिता को नया रंगरुप दे रहे थे । 'आनंद कादंबिनी' पत्रिका में सर्वप्रथम सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी के प्रकाशन परंपरा की शुरुवात हुई । हिंन्दी में पुस्तकों की समीक्षा करने का कार्य सर्वप्रथम आनंद कादबिनी में ही प्रारंभ हुआ था । प्रेमघन ने लाला श्रीनिवासदास के 'संयोगिता स्वयंवर' नाटक की समिक्षा आनंद कादंबिनी में प्रकाशित करके इसका सुत्रपात किया था । 4

सरस्वती का प्रतिमान

सन 1900 में नागरी प्रचारिणी सभा, काशी की और से प्रकाशित 'सरस्वती' के प्रकाशन द्वारा साहित्य रचना के विविध मार्गो के उद्घाटन का उदात्त यज्ञ प्रारंभ हुआ । 'सरस्वती' का संपादन जब आचार्य महावीर प्रसाद त्रिवेदी के हाथ 1903 में आया उन्होंने धीरे–धीरे हिन्दी साहित्य की सर्वांगीण समृध्दि का द्वारा ही उद्घाटित कर दिया । द्विवेदी जी 1903 से 1920 तक जो भी रचनाऐं सरस्वती मे प्रकाशित हुई उन रचाओ की भाषा भावों और विचारों को भी नियंत्रित किया । "सरस्वती ने हिन्दी पत्रकारिता को एक नई दिशा प्रदान की, साहित्य के निर्माण और प्रचार में महत्वपूर्ण योगदान किया, साथ ही हिंदी और हिंदुस्थान की चेतना को उद्बुध्द किया ।" 5 सरस्वती के प्रकाशन के साथ ही हिंदी कहानी का जन्म हुआ । सन 1900 ई में किशोरीलाल गोस्वामी की 'इंदुमती' कहानी इसमें प्रकाशित हुई " 1902 में भगवानदीन की 'प्लेग की चुडैल' छपी " 1903 में रामचंद्र शुक्ल की 'ग्यारह वर्ष का समय' जिसे हिन्दी की पहली मौलिक कहानी होने का श्रेय हासिल है ।

हिन्दी की प्रथम दलित रचना पटना के हीरा डोम की कविता 'अछुत कि शिकायत' 'सरस्वती में' प्रकाशित हिन्दी की यह प्रथम रचना संभवतः भोजपुरी की प्रथम रचना भी है । 1982 मे उस पत्रिका का प्रकाशन बंद हो गया ।

हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता का नया दौर

बीसवी सदी में हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता का नया दौर प्रारभ हुआ था । सन 1900 में ही काशी से देवकीनंदन खत्री एवं माधव प्रसाद मिश्र 'सुदर्शन' नामक मासिक पत्रिका प्रकाशित हुई । 1901 में जयपुर से 'समालोचन' मासिक का प्रकाशन गुलेरी के संपादन से प्रारंभ हुआ इसमे पाडित्यपूर्ण आलोचनाएँ आती थी । 1903 में 'लक्ष्मी' पत्रिका का उदय हुआ । 1907 मे देवनागर प्रकाशित हुई । 1909 मे काशी से संपादक अंबिका प्रसाद

गुप्त के 'इंदु' का प्रकाशन हुआ । 1910 से 'मर्यादा' का प्रकाशन कृष्णकांत मालवीय ने प्रयाग से शुरु किया । 1914 में पटना से काशी प्रसाद जयसवाल के संपादन में 'पाटलिपुत्र' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ । 1917 में 'बालसखा' पत्रिका का प्रकाशन देविदास शुक्ल ने किया ।

1920 में महाविर प्रसाद द्विवेदी के 'सरस्वती' के संपादन से अलग होने के बाद हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता में अनेक साहित्यिक, सांस्कृतिक पत्रिकाओं का प्रादुभाव हुआ । जिन्होने सफलता एवं लोकप्रियता का मुकाम हासिल किया । इनमें आजादी के पुर्व प्रकाशित हानेवाली पत्रिका चांद, माधुरी, मतवालु, सुधा, मधुकर, विशाल भारत, हंस, जागरण, वीणा, प्रतीक, कल्पना, विशेष रुप से उल्लेखनीय है ।

चांद

1920 में यह साप्ताहिक सर्वप्रथम ज्ञानानंद ब्रह्मचारी के संपादन में निकला । 1922 में यह पत्र मासिक रुप में प्रकाशित होने लगा । इसके 16 विशेषांक प्रकाशित हुए, जिसमें विधवांक, अछुतांक, सती अंक, वेशा अंक, मारवाडी अंक चर्चित रहे है ।

माधुरी

यह छायाद युग की प्रतिष्ठीत मासिक पत्रिका थी । इसका प्रकाशन 30 जुलाई 1922 से प्रारंभ हुआ । इसके संपादक दुलारेलाल भार्गव प्रेमचंद, शिवपूजन सहाय जैसे प्रतिष्ठित साहित्यकार थे । इस पत्रिका ने पत्रकारिता जगत को नया आलोक प्रदान किया ।

मतवाला

23 अगस्त 1923 को 'मतवाला' साप्ताहिक का प्रथम अंक निकला इसके संपादक नवजादिक लाल श्रीवास्तव, शिवपूजन सहाय और पं. सुर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' थे । इस पत्रिका के ये तीनों साहित्यकार छद्मनामो से भी लिखते थे । 'निराला' उपनाम मतवाला द्वारा ही दिया गया है । 6 'स्वच्छंदतावादी' काव्यधारा की प्रतिष्ठा का श्रेय भी इसी पत्रिका को है ।

सुधा

1927 में लखनऊ से प्रकाशित हुई संपादक दुलारेलाल भार्गव और रुपनारायण पांडेय थे । इस पत्र की संपादकिय टिप्पनियाँ उल्लेखनिय थी ।

इसी वर्ष 'वीणा' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ । यह पत्रिका आज भी निकलती है । हिन्दी में निकलनेवाली पत्रिकाओं में सबसे पुरानी वीणा ही है ।

विशाल भारत

1928 में विशाल भारत के प्रथम संपादक पं. बनारसीदास चतुर्वेदी थे इस पत्र में उच्च कोटी की रचनाएँ प्रकाशित होती थी । इसके 'कला' अंक को विशेष प्रसिध्दी प्राप्त हुई । चतुर्वेदीजी के संपादन में 'विशाल भारत' अपने समय का एक बहुत ही तेजस्वी और जागररुक पत्र बन गया था । 7

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

हंस

1930 में सम्राट प्रेमचंद ने वाराणसी से हंस निकालना शुरु किया । पत्रिका का शिर्षक छायानादी कवि जयशंकर प्रसाद ने दिया था । "प्रकाशित होते ही हंस समकालीन हिन्दी कथा साहित्य का प्रतिनिधी पत्र बन गया ।" 8

हंस पत्रिका में कविता, निबंध, एकांकी अलोचना, साहित्य की विविध विधाओं का समावेश हंस पत्रिका में है । प्रेमचंद ने "हिन्दी कथा साहित्य को बहुत उँचा उठा दिया ।" 9 बीच में 29 साल यह पत्रिका बंद रही । 1986 में राजेंद्र यादव ने इसे फिर से निसकालना शुरु किया । राजेंद्र यादव के संपादन में इस पत्रिका ने अब तक 25 वर्ष और 300 अंको का सफर तय किया । अब हंस ने दलित विमर्श और स्त्री विमर्श को एक नया आयाम देने का कार्य किया है । 1886 से अब तक हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ कहानियां एवं अन्य रचनाए हंस में प्रकाशित हुई है ।

रंगिला

1932 में रंगिला पत्रिका का उदय हुआ । संपादक सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' थे । 1936 में विश्वभारती पत्रिका निकली । उसके बाद नया समाज, दस वर्ष तक जिया, किंतु अंततः अनेक साहित्यिक पत्रपत्रिकाओं की नियती इसे भी काल–कवलित कर गई । 10

हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता का सुवर्ण युग

1949 में 'कल्पना' का प्रकाशन प्रारंभ हुआ । संपादक आर्येंद्र शर्मा थे । कल्पना में अज्ञेय, माकडेय और सर्वेश्वरदयाल सक्सेना छद्म नाम से लिखते थे ।

1950 के बाद हिन्दी साहित्यिक पत्रकारीता और समृध्द हुई 'हिंदुस्थान' नवभारत टाइम्स, स्वतंत्र भारत, नई दुनिया, अमर उजाला, आज सन्मार्ग, जनसत्ता आदि का नाम लिया जाता है । साप्ताहिक पत्रों में साप्ताहिक, हिंदुस्थान, धर्मयुग, दिनमान, रविवार उल्लेखनिय है । सुमित्रानंदन पंत द्वारा संपादित 'रुपांभ' स्मरणिय है ।

मासिक पत्रों में 'आलोचना' 'निकष' नये पत्ते, 'लहर' नया प्रतिक, पहल ज्ञानोदय, बया आदि विशेष उल्लेखनिय है ।

धर्मयुग

साप्ताहिक पत्र धर्मयुग का प्रथम अंक 1950 में मुंबई में प्रकाशित हुआ था । 1960 में यह पत्रिका पाक्षिक हो गई ।

दिनमान

प्रसिध्द पत्रिका 'दिनमान' को बहुमुखी प्रतिभा के धनी सच्चिदानंद हीरानंद वात्सायन 'अज्ञेय' 1964 में इसे निकालना प्रारंभ किया । 1970 तक इसका संपादन किया "उन्होंने दिनमान का एसा स्वरुप बनाया जो हिंदी में प्रकाशित किसी भी साप्ताहिक से अलग था ।"11

रविवार

1977 में कोलकत्ता से सुरेद्रप्रताप सिंह के संपादन में साप्ताहिक प्रकाशन प्रारंभ हुआ ।

Late Ramesh Warpudkar College, Sonpeth Dist. Parbhani

अलोचना

त्रैमासिक पत्रिका 'अलोचना' का प्रकाशन 1951 में प्रारंभ हुआ । इस पत्रिका का हिन्दी साहित्य के अलोचना क्षेत्र में ऐतिहासिक योगदान है ।

नई कविता

1954 में जगदीश गुप्त के संपादन में 'नई कविता' ने हिन्दी साहित्यिक पत्रकारिता में एक नया प्रतिमान बनाया । 'नई कविता' नाम अज्ञेय ने दिया । इसके पहले अंक में निराला की 'जुही की कली' पर तिव्र प्रतिक्रीया हुई । नई कविता आधुनिक वैचारिक रचनाशिलता का प्रतिमान बन गई । 12

इसके आलावा समाचार पत्रों– जनसत्ता, हिंदुस्तान, दैनिक भास्कर, अमर उजाला, दैनिक जागरण, लोकत समाचार, देशबंधु, प्रभात खबर, सन्मार्ग आदि के रविवारीय अथवा साप्ताहिक क्षेत्रों में भी साहित्यिक सामग्री का नियमित प्रकाशन हो रहा है ।

इलेक्ट्रॉनिक माध्यम, सूचना प्रौद्योगिकी के विकास के साथ हिन्दी की साहित्यिक पत्रिकाओं की संख्या बढ गई । 1969 में हिन्दी में जहाँ कुल मिलाकर 128 पत्रिकाएँ निकलर्ती थी । वही आज लगभग 400 से ज्यादा पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही है ।

आज का समय सामाजिक और वैचारिक सरगर्मियों से भरा है और दुनिया जड से बदल रही है । इन पत्रिकाओंने बौध्दिक वर्ग के सोंच–विचार, चिंतन को प्रभावित करने का कार्य के साथ मानसिक सोंच को बदलने का भी कार्य किया है । अंतः यह स्पष्ट है कि हर अन्याय, शोषण का विरोध करना पत्रकारिता का सबसे बडा मूल्य है और इसमें अपने आप ही सत्य का निर्वाह हो जाता है ।

संदर्भ

1. पत्रकारिता प्रशिक्षण एवं प्रेस विधि – डॉ. सुजाता वर्मा– पृ.15
2. हिन्दी पत्रकारिता:विकास और विविध आयामः– डॉ.सुशिला जोशी पृ.28
3. वही
4. हिन्दी के यशस्वी पत्रकार – क्षेमेंद्र 'सुमन' प्रकाशन विभाग सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार पृ. 13
5. पत्रकारिताः सिद्धान्त एवं स्वरुप– डॉ. रमेशचंद्र त्रिपाठी–राधाकृष्ण पब्लीकेशन, नई दिल्ली– पु. 133
6. वही – पृ. 138
7. हिंन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ. नगेंद्र – पृ. 604
8. वही – पृ. 604.
9. पत्रकारिताः सिद्धांन्त एवं स्वरुप– डॉ. रमेशचंद्र त्रिपाठी – पृ. 278
10. हिन्दी साहित्य का इतिहास – संपादक– डॉ. नगेन्द्र – पृ. 741
11. प्रयोजन मुलक हिन्दी–प्रो.रमेशचंद्र जैन–नॅशनल पब्लिसिंग हाऊस दिल्ली, पृ. 201
12. हिंन्दी साहित्य और सवेदना का विकास – डॉ. रामस्वरुप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, पृ. 234

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani